



उमराह का तरीका

अल रहमान उमराह टूर्स

99- फैथ्फुल गंज कैंट
कानपुर उत्तर प्रदेश (इंडिया)

← →
+91 9415131910 ☎ +91 9415100388 ☎
+91 9696812608 ☎ +91 6394720224 ☎
+966 565867845 ☎

दुआ ए मग़फ़िरत : अतीक बिलाल साहब

फेहरिसत

अनावीन	स. न.
एहराम का तरीका और तरतीब	३
एहराम की पाबन्दियाँ क्या हैं?	४
बैतुल्लाह पर हाज़री	६
तवाफ़ का तरीका	९
तवाफ़ के दौरान सलाम व कलाम	१२
तवाफ़ के बाद की दो रकात	१३
उमरह का तीसरा काम	१४
उमरह का चौथा काम	१६

एहराम का तरीका और तरतीब

हज और उमरह में सब से पहला अमल एहराम है । हज या उमरह की निय्यत से तलबिया पढ़ने को एहराम कहते हैं (मजाज़न इन दो चादरों को भी एहराम कह देते हैं) एहराम बाँधने से पहले हजामत, ज़ेरे नाफ़ बाल, लबें और नाखुन तरश्वा कर फ़ारिग हो जाएं, एहराम से पहले गुस्ल मस्नून है, न हो सके तो वुज़ू ही कर लें ।

एहराम में दो चादरें होती हैं, बगैर सिली हुई , एक चादर को तहे बन्द की तरह बाँध लें और दूसरी चादर को ओढ़ लें, यह एहराम बँध गया, मगर याद रखें अभी एहराम शुरू नहीं हुआ, एहराम शुरू होगा निय्यत करने से और तलबिया (लब्बैक कहने) से, एहराम बाँधने के बाद ऊपर की चादर से सर ढांक कर दो रकात नफ़ल नमाज़ पढ़ लें, अगर वक़्त मकरूह न हो और टोपी पहन कर भी पढ़ सकते हैं क्यों के अभी एहराम शुरू नहीं हुआ । इस के बाद आप को निय्यत और तलबिया पढ़ना है, तलबिया यानी

لَبَّيْكَ اللَّهُمَّ لَبَّيْكَ لَبَّيْكَ لَا شَرِيكَ لَكَ لَبَّيْكَ إِنَّ
الْحَمْدَ وَالنِّعْمَةَ لَكَ وَالْمُلْكَ لَا شَرِيكَ لَكَ “ (मुस्लिम)

चाहे तो फ़ौरन निय्यत कर के तलबिया कह लें या फ़्लाइट में सवार होने के बाद मीक्रात आने से पहले ।

जहाज़ में मीक्रात आने से पहले कपतान की तरफ़ से हाजियों को इत्तेला दी जाती है, के अब आप मीक्रात के क़रीब पहुँच रहे हैं मगर आप इस का इन्तेज़ार न करें बल्के फ़्लाइट में सवार होते ही निय्यत कर लें और तीन मर्तबा ज़रा बुलन्द आवाज़ से लब्बैक पढ़ लें ।

जब आप ने निय्यत और तलबिया कह लिया तो अब एहराम शुरू हो गया, अब आप पर एहराम की पाबन्दियाँ लग गई अब दो बातें आप को समझनी हैं । निय्यत कैसे करना ? और एहराम की पाबन्दियाँ क्या हैं ?

एहराम की पाबन्दियाँ क्या हैं?

जब आप ने एहराम बाँध कर निय्यत कर ली और तलबिया पढ़ लिया तो आप पर एहराम की पाबन्दियाँ लग गई ।

- १) अब आप सर और चेहरा नहीं ढाँक सकते, औरत सिर्फ़ चेहरा न ढाँके, यानी उस पर कपड़ा न लगाए, औरत के लिये सर को छुपाना ज़रूरी है ।
- २) अब आप खुशबू नहीं लगा सकते, न सूँघ सकते हैं, यह हुक्म मर्द व औरत दोनों के लिये है ।

- ३) अब आप अपने चेहरे, सर या बदन के किसी हिस्से का बाल नहीं तोड़ सकते, इसी तरह नाखून नहीं काट सकते, यह हुक्म भी मर्द और औरत दोनों के लिये है।
- ४) अब आप सिला हुआ कपड़ा नहीं पहन सकते, जैसे कुर्ता, पाएजामा, कोट पतलून, बन्यान वगैरह यह हुक्म सिर्फ मर्दों के लिये है।
- ५) अब आप न बीवी से सोहबत कर सकते हैं, ना मियाँ बीवी के तअल्लुकात वाली बातें कर सकते हैं, यह हुक्म भी मर्द और औरत दोनों के लिये है।
- ६) इसी तरह अब आप ऐसा जूता नहीं पहन सकते जो पाओं की उभरी हुई हड्डी को ढाँप दे। जूता बूट न पहनें, सिलीपर जैसी चप्पल पहनें, यह हुक्म सिर्फ मर्दों के लिये है।
- ७) अब आप हरम की घास, पौदा या दरख्त की टहनी नहीं तोड़ सकते, यह हुक्म मर्द व औरत दोनों के लिये है।
- ८) अब आप हरम में किसी भी जानवर का शिकार या शिकार की तरफ इशारा नहीं कर सकते। यहाँ तक के अपने बदन या सर की जूँ भी नहीं मार सकते। यह भी मर्द व औरत दोनों के लिये है तो गोया आठ पाबन्दियाँ मर्दों पर है और छः पाबन्दियाँ औरतों पर

है। लिहाज़ा एहराम की हालत में इन पाबन्दियों का पुरा ख्याल रखें और एहराम की हालत में अपने आप को इबादत, नेकियों और अच्छी आदतों का पाबन्द बनाएं, उलमा ने लिखा है के एहराम की हालत में हाजी जो आदत इस्तिथार करता है इस का असर मौत तक बाक़ी रहता है।

बैतुल्लाह पर हाज़री

अपने कमरे से बावुज़ू हो कर मस्जिदे हराम की तरफ़ चलें। किसी भी दरवाज़े से खुशू व खुज़ू से दाखिल हों, दाखिल होते वक़्त ‘

بِسْمِ اللَّهِ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى رَسُولِ اللَّهِ

कह कर दायँ पाँव अन्दर रखें और यह दुआ पढ़ें

“اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي ذُنُوبِي وَافْتَحْ لِي أَبْوَابَ رَحْمَتِكَ” (तिर्मिज़ी १/१७)

दाखले के वक़्त खाना—ए— काबा पर जब निगाह पड़ती है तो उस वक़्त की दुआ अल्लाह पाक क़बूल फ़रमाते हैं। बेहतर यह है के सब से पहले दुआ यह कर ले के ऐ अल्लाह मौत तक मेरी तमाम जाइज़ दुआओं को जो मेरे हक़ में बेहतर हों और जो तुझे पसन्द हों क़बूल फ़रमा। या यूँ कहें ऐ अल्लाह मुझे मुस्तजाबुद्दावात बना दे।

”اللَّهُ أَكْبَرُ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَاللَّهُ أَكْبَرُ“

कह कर हाथ उठा कर खूब दुआएं करें, जितनी देर दुआ कर सकते हैं और जो दुआएं कर सकते हैं, इन्शाअल्लाह उस वक़्त की सारी दुआएं आप की क़बुल हैं, अगर याद हो तो यह दुआ भी शामिल कर लें।

”اللَّهُمَّ زِدْ بَيْتَكَ هَذَا تَشْرِيفًا وَتَعْظِيمًا وَتَكْرِيمًا وَمُهَابَةً وَزِدْ مَنْ شَرَّفَهُ وَكَرَّمَهُ مِنْ حَجَّةٍ أَوْ اعْتَمَرَةٍ تَشْرِيفًا وَتَكْرِيمًا وَبِرًّا، اللَّهُمَّ أَنْتَ السَّلَامُ وَمِنْكَ السَّلَامُ فَحِينًا رَبَّنَا بِالسَّلَامِ، أَعُوذُ بِرَبِّ الْبَيْتِ مِنَ الدَّيْنِ وَالْفَقْرِ وَمِنْ ضَيْقِ الصَّدْرِ وَعَذَابِ الْقَبْرِ“
(क़ाज़ी ख़ान)

ऐ अल्लाह अपने मुक़द्दस घर की इज़्ज़त व अज़मत, शराफ़त व हैबत में तरक्की फ़रमा और हज व उमरह करने वालों में जो इस की ताज़ीम व तकरीम करें उन को भी शराफ़त व अज़मत और नेकी अता फ़रमा, ऐ अल्लाह तेरा ही नाम सलाम है, और सलामती तेरी ही तरफ़ से है, तू हम पर सलामती भेज, मैं इस मुक़द्दस घर के रब की पनाह

लेता हूँ क़र्ज़ से और मोहताजी से और सीने की तंगी से और क़बर के अज़ाब से।

उमरह और उस का तरीका

अब आप को उमरह करना है, उमरह बहुत आसान है, उमरह में आप को सिर्फ़ चार काम करने हैं। इस को ज़हन में बिठा लो।

- १) पहला काम : निय्यत और लब्बैक के साथ एहराम बाँधना, एहराम तो आप का बंधा हुआ है।
- २) दूसरा काम : बैतुल्लाह का तवाफ़ करना, रमल और इज़्तिबा के साथ, तवाफ़ कहते हैं बैतुल्लाह के गिर्द सात चक्कर लगाने को।
रमल कहते हैं काँधों को हिलाते हुए क़रीब क़रीब क़दम रख कर ज़रा अकड़ कर चलना, रमल तवाफ़ के पहले तीन चक्करों में होता है।
इज़्तिबा : कहते हैं एहराम की ऊपर वाली चादर को दाहनी बग़ल के नीचे से निकाल कर बाएं कंधे पर डालना, इज़्तिबा सातों चक्कर में होता है।
- ३) तीसरा काम : सफ़ा व मरवा के दर्मियान सई करना।
- ४) चौथा काम : हजामत बनवाना, यानी सर के बाल

मुन्डवाना या कतरवाना। बस यह चार काम कर दिये तो आप का उमरह हो गया अब अच्छी तरह समझें तवाफ़ कैसे करना ?

तवाफ़ का तरीका

बैतुल्लाह के चार कोने हैं, एक कोने पर हज्रे अस्वद है, और जब हज्रे अस्वद की तरफ़ रुख करेंगे तो दाहनी तरफ़ और जब हज्रे अस्वद की तरफ़ रुख करेंगे तो दाहनी तरफ़ रुकने इराक़ी है और बाएं तरफ़ रुकने यमानी है, रुकने इराक़ी के बाद वाले कोने को रुकने शामी कहते हैं।

जब तवाफ़ शुरू करें तो आप हज्रे अस्वद पर आएँ, उस वक़्त एहराम में इज़्तिबा कर लें, यानी दाहनी तरफ़ बग़ल से चादर निकाल कर बाएँ कंधे पर डाल लें, हज्रे अस्वद के सामने इस तरह खड़े हों के काबा की तरफ़ रुख हो और पूरा हज्रे अस्वद दाहनी तरफ़ हो, फिर तवाफ़ की निय्यत करें,

“اللَّهُمَّ إِنِّي أُرِيدُ الطَّوَافَ فَيَسِّرْهُ لِي وَتَقَبَّلْهُ مِنِّي”

ऐ अल्लाह मैं तवाफ़ की निय्यत करता हूँ तू इस को आसान फ़रमा और इस को क़बूल फ़रमा, निय्यत कर के दाहनी तरफ़ इतना हटे के हज्रे अस्वद बिल्कुल सामने आजाए, फिर जैसे नमाज़ में हाथ उठाते हैं, इस तरह हाथ

उठा कर यह दुआ पढ़ें

”بِسْمِ اللَّهِ أَكْبَرُ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَلِلَّهِ الْحَمْدُ“

फिर दोनों हाथ हज्रे अस्वद पर इस तरह रखें जैसे सज्दे में रखे जाते हैं। और दोनों हथेलियों के बीच में सर रख कर हज्रे अस्वद को अदब के साथ बोसा दें, भीड़ की वजह से अगर हज्रे अस्वद को बोसा देना मुश्किल हो तो सिर्फ हाथ लगा कर हाथ को बोसा दें, लेकिन आज कल यह भी मुश्किल है। हज्रे अस्वद के पास पहुँचना ही मुश्किल है। तो इस सूरत में दूर से हज्रे अस्वद के सामने हो जाएं, हज्रे अस्वद के सामने एक लकीर खींची हुई है, लेकिन यह लकीर भी अब तो खतम कर दी। इस लिये बेहतर यह है के हज्रे अस्वद के सामने होने के लिये उस लाइट को देखें जो हज्रे अस्वद की सीध में ऊपर लगी हुई है। फिर अपनी जगह खड़े खड़े दुआ पढ़ कर अपनी हथेलियों से हज्रे अस्वद की तरफ इशारा करें, यह ख्याल कर के के हथेलियाँ हज्रे अस्वद पर है। फिर हथेलियों को बोसा दें, फिर दाहनी तरफ बैतुल्लाह का तवाफ़ शुरू करें और तवाफ़ का एक चक्कर पूरा कर के जब हज्रे अस्वद के पास आजाएँ तो फिर हज्रे अस्वद का इस्तेलाम करें यानी दुआ पढ़ कर हाथ से इशारा कर के हथेलियों को बोसा दें तो आप का एक चक्कर और दो बोसे हुए, इस तरह सात

चक्कर पूरे करें। तो सात चक्कर होंगे और आठ बोसे, आप का तवाफ़ हो गया।

पहला और आखरी इस्तेलाम यानी बोसा बहुत एहतेमाम से करें, यह बहुत मुवक्कद है, यह बात भी याद रखें के तवाफ़ के दौरान सीना या पीठ बैतुल्लाह की तरफ़ न करें इस से तवाफ़ फ़ासिद हो जाता है इस को दोबारा करना पड़ेगा, हाँ हज्रे अस्वद के बोसा के वक़्त सीना और पीठ और चेहरा हज्रे अस्वद की तरफ़ करना मना नहीं है, बल्के मस्नून है, नीज़ तवाफ़ के दौरान अपने सामने की तरफ़ देखता रहे, इधर उधर देखना मकरूह और खिलाफ़े अदब है, तवाफ़ के दौरान बैतुल्लाह की तरफ़ मुँह करना मकरूहे तहरीमी है, इसी तरह आप देखेंगे के बहुत सारे लोग रुकने यमानी को भी बोसा देते हैं और दूर से छूते हैं, इस में मसअूला यह है के जब आप रुकने यमानी पर पहुँचें तो उस को दोनों हाथ या सिर्फ़ दाएं हाथ से छू लेना सुन्नत है, इस को बोसा न दें, यह सुन्नत नहीं है बल्के हाथ लगाना सुन्नत है, वह भी करीब से, अगर आप दूर हैं तो इशारे से छूना भी नहीं है।

(इज़ाहु त्ताहावी / बदायु स्सनाए)

यह बात ज़हन में रखें के आप जो लब्बैक पढ़ते रहते थे वह उमरह का तवाफ़ होते ही बन्द कर दें, अब न पढ़ें।

यह बात भी याद रखें के इज्तिबा यानी दाहनी बगल से चादर निकाल कर बाएँ काँधे पर रखना यह सातों चक्कर में होगा और रमल यानी अकड़ कर चलना पहले तीन चक्करों में होगा।

तवाफ़ के दौरान दुआएँ पढ़ते रहें जो याद हों, अगर कुछ याद न हों तो “सुब्हानल्लाह, अल्हम्दुलिल्लाह, ला इलाहा इलल्लल्लाहु, अल्लाहु अक्बर” पढ़ते रहें।

नोट : तवाफ़ के सातों चक्करों की दुआएँ और इसी तरह मौक़े महल की दुआएँ किताब के अखीर में लिखी जा रही हैं हो सके तो उन को भी याद कर लें।

तवाफ़ के दौरान सलाम व कलाम

तवाफ़ के दौरान अगर किसी दोस्त से मुलाक़ात हो जाए तो उस से सलाम व मुसाफ़ा कर सकते हैं, और ज़रूरत के बक़द्र बात भी कर सकते हैं, इसी तरह मसअला मसाइल पूछ सकते हैं, अपनी बात भी कर सकते हैं, लेकिन बात चीत के दौरान सामने निगाह रखनी चाहिये, इधर उधर मुड़ना मना है, बहुत ज़्यादा बे ज़रूरत बात चीत करना मकरूह है।

(इज़ाहुल मनासिक/ग़ैबता)

तवाफ़ के बाद की दो रकात

तवाफ़ के बाद आप मक़ामे इब्राहीम की तरफ़ आएँ,
अगर याद हो तो यह आयत पढ़ें,

{ وَاتَّخِذُوا مِنْ مَّقَامِ إِبْرَاهِيمَ مُصَلًّى }

अगर मक़ामे इब्राहीम के पीछे सहूलत से जगह मिल जाए तो ठीक है, वरना जहाँ जगह मिले दो रकात तवाफ़ की पढ़ें। नमाज़ पढ़ते वक़्त जो इज़्तिबा था यानी बगल खुला था इस को डांक दें, हर तवाफ़ के ख़त्म पर दो रकात वाजिब है, चाहे नफ़ली तवाफ़ हो, नमाज़ पढ़ कर ख़ूब गिड़ गिड़ा कर अल्लाह से दुआएँ करें, इस के बाद अगर सहूलत हो तो मुलतज़म पर आएँ, हज़्रे अस्वद और काबा के दरवाज़े के बीच में ढाई गज़ के करीब बैतुल्लाह की दीवार का जो हिस्सा है उस को मुलतज़म कहते हैं, यह दुआ की क़बूलियत की खास जगह है, इस से रसूलुल्लाह ﷺ इस तरह लिपट जाते थे जिस तरह बच्चा माँ के सीने से लिपट जाता है, अगर मौक़ा मिले तो लिपट जाएं, सीना इस से लगाएं, कभी दाहना कभी बायां रूख़सार उस पर रखें और ख़ूब रो रो कर दुआ करें। मगर इस तरह जाने की कोशिश हरगिज़ न करें के दूसरों को तकलीफ़ पहुँचे या खुद के लिये ख़तरा हो जाए। हर अमल में इस का ख़याल रखें।

इस के बाद ज़मज़म पर आएँ, अब तो वह कुँवा नहीं है, जगह जगह पर नल लगे हुए हैं, बैतुल्लाह की तरफ़ मुँह कर के पेट भर कर ज़मज़म का पानी पियें। शुरू में बिस्मिल्लाह और अखीर में अलहम्दुलिल्लाह पढ़ें और यह दुआ पढ़ें।

”اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ عِلْمًا نَافِعًا وَرِزْقًا وَاسِعًا
وَشِفَاءً مِنْ كُلِّ دَاءٍ“

ऐ अल्लाह मुझे इल्मे नाफ़े अता फ़रमा , वुस्अत वाली रोज़ी अता फ़रमा और हर बीमारी से शिफ़ा दे।

ज़मज़म का पानी बैठ कर पीयें या खड़े हो कर?

आम तौर पर लोग खड़े हो कर ही पीते हैं बल्के खड़े होने का एहतेमाम करते हैं और इस को सुन्नत समझते हैं, तो इस सिलसिले में मसअला जानना चाहिये के ज़मज़म का पानी भी बैठ कर पीना सुन्नत है, अलबत्ता खड़े हो कर भी पी सकते हैं, जाइज़ है।

उमरह का तीसरा काम

आप को उमरह में चार काम करने थे, दो काम आप ने कर लिये, एहराम और तवाफ़।

अब तीसरा काम है सफ़ा और मरवा के दर्मियान सई करना यानी सफ़ा पहाड़ से मरवा पहाड़ी तक और मरवा से सफ़ा तक चलना ।

जिस तरह तवाफ़ शुरू करने से पहले आप ने हज़रे अस्वद का इस्तेलाम किया था या हाथ से इशारा कर के हथेलियों को बोसा दिया था इसी तरह बोसा दे कर सफ़ा पहाड़ी पर आँ, ये बोसा देना न भूलें, यह सुन्नत है, सफ़ा पर चढ़ कर सई की निय्यत करें, ”اللَّهُمَّ إِنِّي أُرِيدُ السَّعْيَ بَيْنَ الصَّفَا وَالْمَرْوَةِ“

”بِسَبْعَةِ أَشْوَاطٍ لِلَّهِ تَعَالَى فَيَسِّرْهُ لِي وَتَقَبَّلْهُ مِنِّي“
ऐ अल्लाह मैं सफ़ा मरवा की सई की निय्यत करता हूँ सात चक्करो के साथ तु इस को आसान फ़रमा और क़बूल फ़रमा ।

हुज़ूर ﷺ की इत्तेबा में बेहतर है के आप भी कहें

”أَبْدَأُ بِمَا بَدَأَ اللَّهُ بِهِ إِنَّ الصَّفَا وَالْمَرْوَةَ مِنْ شَعَائِرِ اللَّهِ“

फ़िर सफ़ा पर चढ़ कर बैतुल्लाह की तरफ़ रुख कर के दोनों हाथ उठा कर अल्लाह से दुआ करें । यह जगह भी दुआ के क़बूलियत की है । इस के बाद नीचे उतर कर मरवा की तरफ़ चलें, सई के दर्मियान चौथा कलिमा, तीसरा कलिमा और यह दुआ पढ़ते रहें ”رَبِّ اغْفِرْ وَارْحَمْ وَتَجَاوَزْ عَمَّا تَعْلَمُ“

”إِنَّكَ أَنْتَ الْأَعَزُّ الْأَكْرَمُ“

ऐ पर्वरदिगार बरूश दे और रहम फ़रमा और हमारी जो ग़लतियां तेरे इल्म में हैं उन से दरगुज़र फ़रमा, तू बहुत ग़ालिब और बड़ा ताक़तवर है, और बड़ा करीम है।

सफ़ा से कुछ दूर चल कर दो हरे सुतून नज़र आएंगे, इन को मिलैन अरूज़रैन कहते हैं, वहाँ से ज़रा दौड़ कर चलें, इस के बाद दो हरे सुतून और नज़र आएंगे वहाँ पहुँच कर दौड़ना बन्द कर दें अपनी रफ़्तार चलें, यह हुक्म सिर्फ़ मर्दों के लिये है, औरतें अपनी रफ़्तार चलें, मरवा पर हुँच कर भी बैतुल्लाह की तरफ़ रुख़ कर के यहाँ भी दोनों हाथों को उठा कर ख़ूब दुआँ करें, जैसे सफ़ा पर की थीं, यह भी क़बूलियत की जगह है, यह आप का एक फेरा हुआ, फिर मरवा से सफ़ा पर जाएंगे तो दूसरा फेरा होगा, इस तरह सात फेरे पूरे करें, सातवाँ फेरा मरवा पर ख़तम होगा, हर फेरे में सफ़ा और मरवा पर इसी तरह दुआ करते रहें और हर फेरे में दो हरे सुतून के बीच में दौड़ते हुए चलें, हर फेरे में ज़िक्र व दुआ करते रहें, ख़ामोश न रहें।

उमरह का चौथा काम

अब तीसरा काम सई भी हो गया, इस के बाद वहीं बाबे मरवा पर हज्जाम मौजूद आप का इन्तेज़ार कर रहे

होंगे, इनसे अपने सर के बाल मुण्डवा दीजिये, चौथा काम भी हो गया, अब आप का उमरह पूरा हो गया, एहराम की सारी पाबन्दियां अब खतम हो गईं। अपने घर पर जाएँ, नहा धो कर अपने कपड़े पहन लें, खुशबू और अतर लगाएँ, अब आप के लिये वह सब चीज़ें जाइज़ हो गईं जो एहराम की वजह से मना थीं।

औरतों के लिये सर मुण्डाना नहीं है, बल्के थोड़े बाल काटना है यानी अपनी चोटी के निचले हिस्से से एक पोर के बराबर बाल काटे, तक्ररीबन देढ़ इन्च, अब औरतों पर से भी एहराम की पाबन्दियां खतम हो गईं।

अल रहमान उमराह टूर्स

99- फैथ्फुल गंज कैंट
कानपुर उत्तर प्रदेश (इंडिया)

← +91 9415131910 ☎ +91 9415100388 ☎ →

+91 9696812608 ☎ +91 6394720224 ☎

+966 565867845 ☎

दुआ ए मग़फ़िरत : अतीक बिलाल साहब